राष्ट्रीय आय का विश्लेषण

राष्ट्रीय आय शब्द सुनते ही आपके मस्तिष्क में यह बात आती होगी कि यह, जैसे किसी परिवार कि आय होती है कुछ उसी तरह कि संकल्पना होगी,आप यह भी सोच सकते है कि जिस प्रकार से परिवार कि आय निकालने के लिए परिवार के सभी सदस्य कि आय को जोड़ लिया जाता है उसी प्रकार देश कि आय भी सभी लोगों कि आय जोड़कर निकाल सकते हैं| राष्ट्रीय आय कि संकल्पना परिवार कि आय जैसी है या अलग यह आगे विश्लेषण में स्पष्ट होगा लेकिन यह तो तय है कि यह राष्ट्र /देश/अर्थव्यवस्था के कुल आय कि ही बात हो रही है|
राष्ट्रीय आय क्या होती है ? इसके पूर्व यह जानना आवश्यक हो जाता है कि किसी देश के राष्ट्रीय आय का अध्ययन क्यों किया जाता है? आइये इसे समझने का प्रयास करते हैं -

किसी अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीय आय का अध्ययन समष्टि अर्थशास्त्र कि विषयवस्तु है |अर्थशास्त्र के अध्ययन कि वह विधा जिसमे किसी अर्थव्यवस्था का समग्र रूप से विश्लेषण किया जाता है ,समष्टि अर्थशास्त्र (macro economics) कहलाता है|अत: राष्ट्रीय आय किसी अर्थव्यवस्था से समग्र रूप से सम्बंधित होती है |समग्र अर्थव्यवस्था से सम्बंधित होने के कारण राष्ट्रीय आय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण हो जाती है| किस प्रकार महत्वपूर्ण हो सकता है राष्ट्रीय आय विश्लेषण निम्नवत शीर्षकों में समझा जा सकता है |

1- अर्थव्यवस्था का मूल्यांकन तथा भविष्य की योजना :- किसी भी देश के आर्थिक विकास का मूल्यांकन के लिए रष्ट्रीय आय का विशेष महत्व है हम राष्ट्रीय आय के आकलन के आधार पर ही यह बता सकते है कि अमुक देश में विकास हो रहा या नहीं,अर्थात यह देश कि प्रगति का सूचक होता है इसके आधार पर ही देश के लिए विकास योजना भी बनायीं जाती है|

2- **अर्थव्यवस्था का क्षेत्रवार विकास:-** राष्ट्रीय आय के विश्लेषण के आधार किसी देश के विभिन्न क्षेत्रों यथा कृषि,उद्योग और सेवा क्षेत्र का योगदान जाना जा सकता है और यह भी पता कर सकते है कि अमुक क्षेत्र में जिस तरह कि वृद्धि चाहिए वह प्राप्त हो रही कि नहीं|

3-**अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों का अंतर्संबंध और तुलनात्मक अध्ययन :-**राष्ट्रीय आय विश्लेषण के अध्ययन अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों तथा प्रदेशों के अंतर्संबंधों का पता चलता है और विकास

योजनाओं में उनके योगदान का मूल्यांकन होता है साथ ही तुलनात्मक अध्ययन भी संभव होता है जिससे विकास योजनाओं में उनका समुचित भूमिका तय कि जा सके|
अन्य देशों से तुलना का आधार :- किसी दो देश कि तुलना करने में भी राष्ट्रीय आय के आंकडे महतवपूर्ण है |राष्ट्रीय आय के आधार पर ही विभिन्न देशों के बीच तुलना होती है और उनके जीवन स्तर की तुलना होती है |

4-**सरकारों द्वारा नीति निर्धारण में:-** किसी देश का राष्ट्रीय आय उस देश के नीति निर्धारण में आधार का कार्य करता है|यह किसी देश में योजना बनाने में सहायता करते हैं |किस क्षेत्र में कैसी योजना कि जरुरत है यह उस क्षेत्र के राष्ट्रीय योगदान पर निर्भर करता है|

5-**आय के वितरण का अध्ययन :-** विभिन्न वर्गों के बीच आय वितरण किस प्रकार का है इसका अध्ययन भी राष्ट्रीय आय के आकड़ो के विश्लेषण से ही ज्ञात होता है|समाजवादी समाज कि स्थापना हेतु योजना निर्माण करने वाले देशों में इसका विशेष महत्व है |

6- देश की प्रगति का अनुमान :- देश कि नीतियों द्वारा देश का आर्थिक विकास हो रहा या नहीं यह राष्ट्रीय आय सम्बन्धी आकंडे ही बताते हैं |विभिन्न संस्थाओ द्वारा देशो के मूल्यांकन में या तुलनात्मक इंडेक्स बनाने में इन आंकड़ो का ही प्रयोग करते हैं |

7-**अर्थव्यवस्था के भूत ,वर्तमान तथा भविष्य का संकेत :-** राष्ट्रीय आय सम्बन्धी आंकड़े किसी देश के भूत ,वर्तमान और भविष्य का स्पष्ट संकेत करते है यह भूतकाल के विशेष परिवर्तन ,वर्तमान के हालत तथा भविष्य में क्या परिवर्तन की आवश्यकता है उसकी ओर स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं |जैसे कृषकों कि आय तथा राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र के योगदान के आधार पर कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में और कृषि एवं कृषक सम्मत नीति बनाने कि आवश्यकता है जिससे राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान तथा राष्ट्रीय आय के वितरण में कृषकों का हिस्सा बढ़ सके |

इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी देश के लिए राष्ट्रीय आय का विश्लेषण कितना महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है| कीन्स के पूर्व राष्ट्रीय आय विश्लेषण को इतना महत्व नही दिया जाता था परन्तु अब यह किसी भी देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है उपरोक्त विश्लेषण से भी स्पष्ट है |अब हम राष्ट्रीय आय कि संकल्पना और उससे सम्बंधित अवधारणाओं को समझने का प्रयास करते हैं|

राष्ट्रीय आय की संकल्पना

साधारण रूप में देखा जाए तो किसी देश में एक वर्ष में जितना उत्पादन होता है चाहे वह वस्तुएं हो या चाहे सेवाएं उस देश की आय कहलाती है |राष्ट्रीय आय की परिभाषा के विषय में अर्थशास्त्री एक मत नही हैं लेकिन किस परिभाषा को ठीक ,किसको ठीक नहीं कहा जा सकता यह राष्ट्रीय आय को किस प्रयोग में लाया जाता है इस पर निर्भर करेगा | सबसे पहले हम राष्ट्रीय आय कि दी गयी परिभाषाओं को अर्थशास्त्रियों के अनुसार देखते हैं|

प्रो० मार्शल के अनुसार किसी देश का श्रम तथा पूंजी इसके प्राकृतिक साधनों का प्रयोग करके प्रत्येक वर्ष भौतिक तथा अभौतिक वस्तुओं की जिसमे सेवा भी सम्मिलित है,का विशुद्ध मात्रा का उत्पादन करते हैं |...इसमें विदेशी विनियोग से उत्पन्न आय भी जोड़ी जानी चाहिए, यह उस देश प्रतिवर्ष वार्षिक आय या राष्ट्रीय लाभांश है|

प्रो० पीगू के अनुसार राष्ट्रीय आय किसी देश या समाज की भौतिक अथवा वाह्य आय का वह भाग जिसमे विदेशो से प्राप्त आय भी सम्मिलित है तथा जिसे मुद्रा के रूप में मापा जा सकता है |

प्रो० फिशर के अनुसार राष्ट्रीय आय अथवा लाभांश में वही सेवाएं सम्मिलित की जाती हैं जो कि उपभोक्ता को अपने भौतिक अथवा मानवीय वातावरण द्वारा प्राप्त होती हैं |

प्रो० साइमन कुजनेट्स के अनुसार राष्ट्रीय आय वस्तुओं तथा सेवाओं कि वह विशुद्ध उत्पत्ति है जो अंतिम उपभोक्ताओं के हाथ में पहुँचती है| अथवा देश के पूंजीगत सामान के स्टाक में वृद्धि करती है|

प्रो० कीन्स ने भी समग्र व्यय ,साधन आय तथा लागत के आधार पर राष्ट्रीय आय का आकलन किया|

इन सभी परिभाषाओँ के अध्ययन से कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय आय, निश्चित समय में किसी अर्थव्यवस्था के समस्त उपलब्ध साधनों से उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य का योग होता है |यहाँ राष्ट्रीय आय के मापन के अध्ययन से पूर्व राष्ट्रीय आय से सम्बंधित कुछ

अवधारानायें भी हैं जो समझना आवश्यक है |इन अवधारणाओं के अध्ययन से राष्ट्रीय आय सम्बन्धी संकल्पना और भी स्पष्ट हो जाती है |राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित जो प्रमुख अवधारणा है वह सकल घरेलू उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद की है |

सकल घरेलू उत्पाद :- किसी अर्थवयवस्था के सकल घरेलू उत्पाद से तात्पर्य किसी अर्थव्यवस्था के एक निश्चित समय में उसके आर्थिक घरेलू क्षेत्र में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य से होता है|

सकल राष्ट्रीय उत्पाद :- किसी अर्थव्यवस्था के निवासियों के द्वारा एक निश्चित समय में उत्पादित कुल अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहलाता है |इसमें विदेशों से होने वाली आय को भी सम्मिलित किया जाता है जबकि घरेलू क्षेत्र में विदेशियों द्वारा प्राप्त आय को घटा दिया जाता है |

इन दो मुख्य अवधारणा से ही राष्ट्रीय उत्पाद सम्बन्धी अन्य अवधारणाओं की उत्पत्ति होती है हम जानते है कि उत्पादन के दौरान कुछ नुकसान ,टूट-फूट या घिसावट होती है इसे ठीक करने में भी कुछ आय लगता है इसे हम ह्रास कह सकते है इसी तरह से जो वस्तु या सेवा उत्पादित होती है उसके बाज़ार मूल्य में टैक्स जुड़ा होता है या सब्सिडी मिली होती है ऐसे में बाज़ार मूल्य तथा लागत मूल्य में अंतर होता है अत: इन आधारों पर राष्ट्रीय आय के मूल दो अवधारणा से कुल 8 अवधारणा बन जाती है जो निम्नवत है-

सकल घरेलू उत्पाद से

1-सकल घरेलू उत्पाद बाज़ार मूल्य पर(GDPMP) = सकल होने के कारण ह्रास इसमें होता है बाज़ार मूल्य होने के कारन टैक्स और सब्सिडी भी होगा |

2-सकल घरेलू उत्पाद साधन लागत पर (GDPFC)= सकल होने के कारण ह्रास होगा साधन लागत पर होने के कारण साधनों को मिलने वाली आय ही होगी अत: निबल परोक्षकर (टैक्स और सब्सिडी का अंतर) नहीं होगा अर्थात (GDPFC)= (GDPMP)-निबल परोक्षकर

3-शुद्ध घरेलू उत्पाद बाज़ार मूल्य पर (NDPMP)= शुद्ध है इसलिए ह्रास सम्मिलित नहीं होगा | अर्थात (GDPMP)-ह्रास

4- शुद्ध घरेलू उत्पाद साधन लागत पर (NDPFC)= शुद्ध है इसलिए ह्रास नहीं होगा और साधन लागत पर है इसलिए निबल परोक्ष कर भी नहीं होगा अर्थात
(GDPMP)-निबल परोक्षकर-ह्रास

सकल राष्ट्रीय उत्पाद से

1-सकल राष्ट्रीय उत्पाद बाज़ार मूल्य पर (GNPMP)=सकल है इसलिए ह्रास होगा और बाज़ार मूल्य पर है तो निबल परोक्ष कर भी होगा यहाँ विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित होगी|

2- सकल राष्ट्रीय उत्पाद साधन लागत पर (GNPFC)= सकल है इसलिए ह्रास होगा और साधन लागत पर है तो निबल परोक्ष कर नहीं होगा यहाँ विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित होगी| अर्थात(GNPFC)= (GNPMP)- निबल परोक्षकर

3-शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद बाज़ार मूल्य पर (NNPMP)= शुद्ध है इसलिए ह्रास सम्मिलित नहीं होगा और बाज़ार मूल्य पर है तो निबल परोक्ष कर भी होगा यहाँ विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित होगी | अर्थात(NNPMP)= (GNPMP)-ह्रास

4- शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद साधन लागत पर (NNPFC)= शुद्ध है इसलिए ह्रास सम्मिलित नहीं होगा| साधन लागत पर है तो निबल परोक्ष कर नहीं होगा यहाँ विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित होगी| अर्थात (NNPFC)= (GNPMP)-ह्रास- निबल परोक्षकर

राष्ट्रीय आय या उत्पाद सम्बन्धी इन अवधारणाओं और उनके पारस्परिक संबंधो को निचे दिए गये रेखाचित्र के माध्यम से भी समझा जा सकता है |

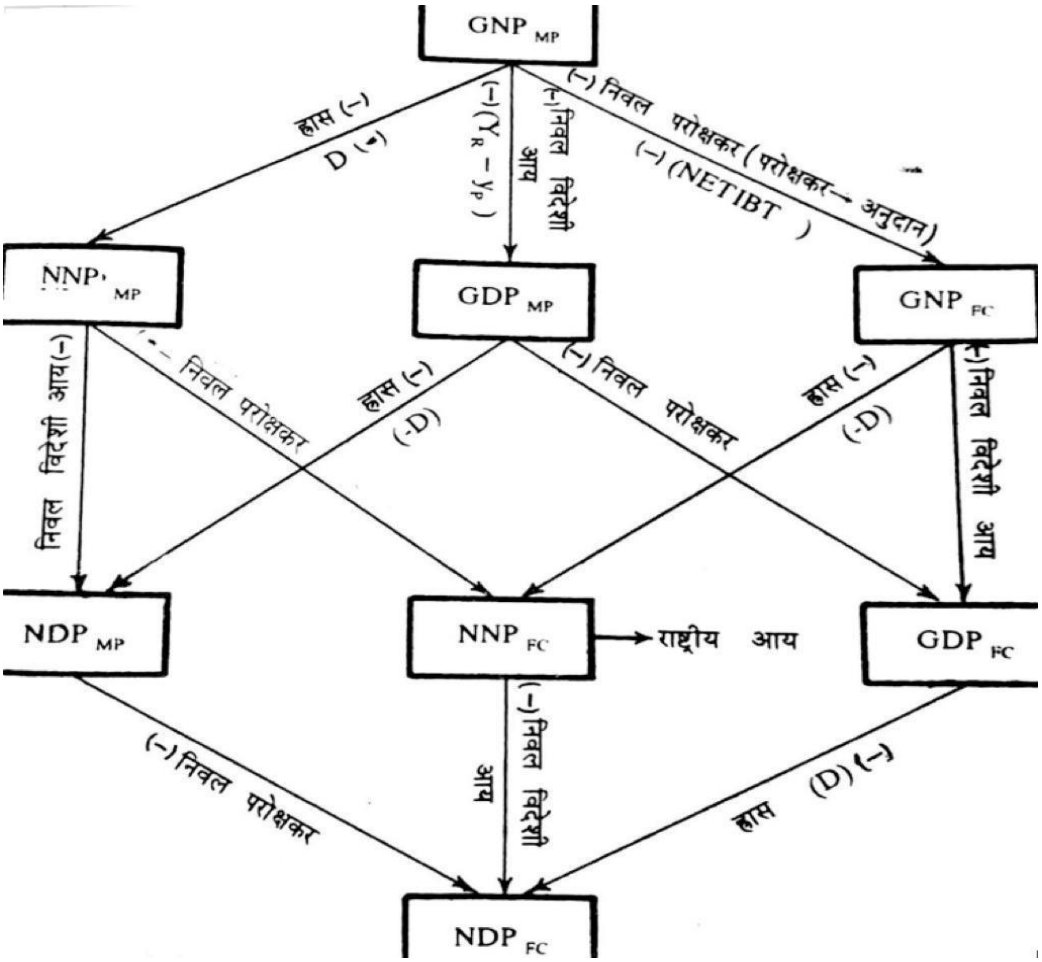

राष्ट्रीय उत्पाद कि अवधारणायें

राष्ट्रीय आय का मापन

राष्ट्रीय उत्पाद की विभिन्न अवधारणा देखने से ज्ञात होता है की राष्ट्रीय आय के मापन के लिए मुख्य रूप से इतनी अधिक वस्तुओं और सेवाओं की गणना ,इन वस्तुओं और सेवाओं के गणना में दुहराव न हो के साथ वे इसी चालू वर्ष में अर्थव्यवस्था के साधनों से उत्पादित हो का ध्यान रखना होगा ऐसे में राष्ट्रीय उत्पाद का आकलन कैसे हो ?

यदि हम एक उदाहरण द्वारा राष्ट्रीय उत्पादन को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि किसी वस्तु का उत्पादन ,उसके उत्पादन में लगे साधनों कि आय तथा वस्तु या सेवा पर होने वाला व्यय बराबर होते हैं |जैसे किसी अर्थव्यवस्था में किसी वस्तु या सेवा का उत्पादन होता है जिसका बाज़ार मूल्य रू1000 है इस प्रकार यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद(GNP) हुआ | यही रू 1000 उत्पादन के साधनों को मजदूरी ,लगन,व्याज,लाभ आदिके रूप में प्राप्त होगा |इस प्रकार यह उत्पादन के सभी साधनों की

आय हो जाएगी इसे हम सकल राष्ट्रीय आय(GNI) कह सकते हैं |अब जो वस्तु या सेवा रु 1000 की है जो आय के रूप में साधनों को मिली है वो खर्च होगी जो 1000 के बराबर ही होगी इसे सकल राष्ट्रीय व्यय (GNE) कह सकते है | इस प्रकार हम कह सकते है कि राष्ट्रीय उत्पाद को देखने के ये तीन तरीके हो सकते है जो समान परिणाम तक पहुंचाते हैं| अत: राष्ट्रीय उत्पाद के मापन की यह तीन विधियां हुई |अब हम इन्ही तीन विधियों का अध्ययन करेंगे|

1-उत्पादन या मूल्य वर्धन विधि -

इस विधि में हम राष्ट्रीय आय तक उत्पादन की ओर से पहुंचते हैं । इस विधि में हम अर्थव्यवस्था को विभिन्न भागों या क्षेत्रों में बांट देते हैं । ये विभिन्न भाग है कृषि , खनिज उद्योग , निर्माण उद्योग , लघु उद्यम , वाणिज्य , परिवहन तथा अन्य सेवाएं । प्रत्येक भाग या क्षेत्र में विभिन्न उत्पादकों द्वारा उत्पन्न वस्तुओं या सेवाओं को कीमतों के आधार पर मुद्रा के रूप में ज्ञात कर लिया जाता है । तब कुल उत्पादन का अनुमान लगाने के लिए सभी क्षेत्रों या भागों द्वारा एक वर्ष में की गई उत्पादन मूल्यों में निवल वृद्धियों (net values added) को जोड़ लिया जाता है । किसी विशेष फर्म द्वारा निवल मूल्य वृद्धि (net values added) को मालूम करने के लिए इस फर्म में हुए कुल उत्पादन में से इस फर्म द्वारा अन्य उद्योगों या फर्मों से खरीदे गए पदार्थों के मूल्य को निकाल लिया जाता है । अर्थव्यवस्था के सभी उद्योगों और फर्मों निवल उत्पादन के मूल्यों के कुल जोड़ तथा विदेशी व्यापार से निवल आय को जमा करके कुल राष्ट्रीय उत्पादन (Gross National Product) ज्ञात किया जाता है । इस कुल राष्ट्रीय उत्पादन में से पूंजी में हुए मूल्यहास (depreciation) को निकाल कर निवल राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाया जाता है । राष्ट्रीय आय का इस प्रकार माप करने से हमें उसके विधिन स्रोतों का पता चल सकता है । इसलिए इसको औद्योगिक स्रोतों के आधार पर राष्ट्रीय आय (National Income by Industrial Origin) भी कहते हैं ।

इस विधि से राष्ट्रीय आय को नापने का बड़ा लाभ यह है कि इससे अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के सापेक्ष महत्व का पता चल जाता है । राष्ट्रीय आय को मापने की इस विधि का प्रयोग वहां किया जाता है जहाँ उत्पादन गणना (census of production) होती है । बहुत से देशों में केवल महत्त्वपूर्ण उद्योगों में हुए उत्पादन के आंकड़े मिलते हैं । इसलिए बहुत से देशों में राष्ट्रीय आय मापने की इस विधि का प्रयोग अन्य विधियों के साथ किया जाता है ।

उदाहरण के लिए लोहे बाल्टी के उत्पादन को देखते हैं --

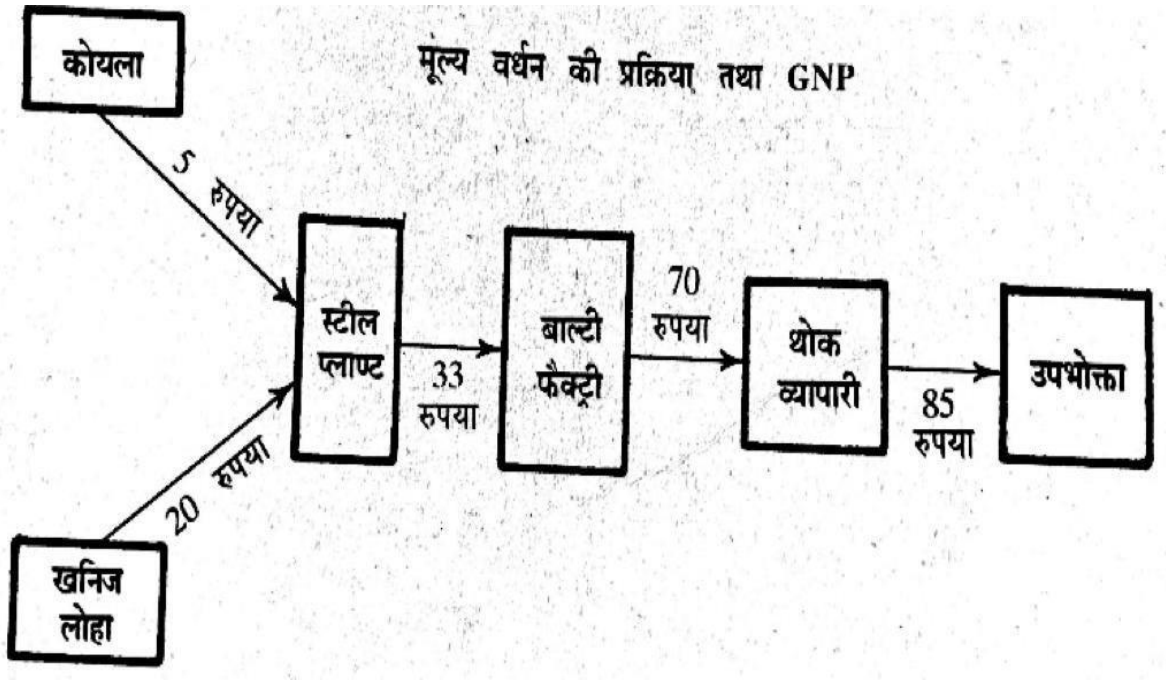

राष्ट्रीय आय लेखाङ्कन यदि हम ऊपर दिये गये उदाहरण को देखें तो हम पायेंगे कि बाल्टी का मूल्य 85 रुपया है , जिस मूल्य पर उपभोक्ता बाल्टी क्रय करेगा । सकल राष्ट्रीय उत्पाद (बाल्टी की संख्या X बाल्टी का मूल्य) = 85 रुपया होगा । समग्र व्यय की दृष्टि से भी यही सकल राष्ट्रीय उत्पाद होगा GNP = C = 85 | आइये हम यह देखें कि वर्धित मूल्य की दृष्टि से राष्ट्रीय उत्पाद का क्या मूल्य होगा ? यदि हम ऊपर दिये गये उदाहरण को देखें तो यह पायेंगे कि कोयला द्वारा 5 रुपया तथा खनिज लोहा द्वारा 20 रुपया वर्धित मूल्य होगा । स्टील प्लांट में ये दोनो ही 25 रु ० आगत प्रयोग में आते है । कोयला तथा खनिज लोहा को स्टील प्लांट स्टील में बदलता है , तथा 33 रुपये का स्टील बाल्टी फैक्ट्री को बेचता है । स्टील प्लाण्ट द्वारा वर्धित मूल्य 33-25 = 8 रुपया । बाल्टी फैक्ट्री बाल्टी बनाकर तथा अपनी अन्य सेवाओं के साथ 70 रुपये में बाल्टी थोक व्यापारी को बेचती है , उसके द्वारा वर्धित मूल्य (70 – 33 =) 37 रुपये हैं । इसी प्रकार हम थोक व्यापारी का वर्धित मूल्य 15 रुपया ज्ञात कर सकते है | इन सभी वर्धित मूल्यों का योग 5 + 20 + 8 + 37 + 15 = 85 सकल राष्ट्रीय उत्पाद होगा । जिस प्रकार से हम लोगों ने एक इकाई के सम्बन्ध में गणना की , इसी प्रकार यदि हम सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में वर्धित मूल्य ज्ञात कर लें तो इनका योग ही सकल राष्ट्रीय उत्पाद होगा । इस विधि के अनुसार माध्यमिक वस्तुओं को छोड़ा नहीं जाता है जैसा व्यय विधि के अन्तर्गत किया जाता है , पर चूँकि इस प्रकार की क्रिया में वर्धित मूल्य ही अन्तिम योग में सम्मिलित किया जाता है माध्यमिक वस्तुओं के कारण समस्या नहीं होती इसलिए इसमें दोहरी गणना नहीं होती है

।वर्धित मूल्य विधि तथा समग्र व्यय विधि दोनों से ही प्राप्त परिणाम एक ही होंगे । यह एक स्वाभिवक तथ्य है कि कोई अर्थव्यवस्था अपनी सम्पूर्ण क्रियाओं के कारण जो प्राप्त करती है वह अर्थव्यवस्था की औद्योगिक इकाइयों के योगदान के बराबर होगी|

2-व्यय विधि -

राष्ट्रीय आय मालूम करने की दूसरी विधि व्यय विधि की है । इस विधि में राष्ट्रीय आय का अनुमान सभी प्रकार की वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए गए कुल व्ययों को लेने से जो कुल व्यय होगा , वह राष्ट्रीय आय होगी । उत्पादन का कुछ भाग तो व्यक्ति और परिवार उपभोग के लिए खरीदते हैं , कुछ भाग उद्यमी लोग निवेश (investment) के लिए खरीद लेते हैं , कुछ भाग सरकार अपने कार्यों के लिए खरीद लेती है और कुछ भाग विदेशी लोग खरीद लेते हैं । अत : कुल राष्ट्रीय आय या उत्पादन को मालूम करने के लिए हमें निम्नलिखित राशियों को जोड़ना होता है

(1) वैयक्तिक उपभोग व्यय (Personal Consumption Expenditure) - अर्थात् वह सारा व्यय जो देश के लोग या परिवार अपने निजी उपभोग के लिए वस्तुओं तथा सेवाओं पर करते हैं । इन उपभोग की जाने वाली वस्तुओं तथा सेवाओं को तीन वर्गों में बाँटा जाता है । टिकाक उपभोक्ता वस्तुएं , गैर - टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं तथा सेवाएं (services) | गैर - टिकाल उपभोक्ता वस्तुएं वे हैं जिनका का उपभोग अल्पकाल में ही हो जाता है जैसे कि खाद्यान्न , पेय पदार्थ कपड़ा आदि । टिकाक उपभोक्ता दे हैं जिनका उपयोग दीर्घकाल तक होता रहता है जैसे कि कारें , टी . बी . (TV) आदि । सेवाओं में व्यक्तियों जैसे कि शिक्षकों , वकीलों , डाक्टरों इत्यादि द्वारा किए गए कार्य |

(2)सकल निजी निवेश (Gross Private Investment) -अर्थात् जितना व्यय गैर - सरकारी उद्यमी या व्यवसायी नये निवेश (new investment) पर और पुरानी पूंजी को कायम रखने पर करते हैं । निजी निवेश को भी तीन वर्गों में बाँटा जाता है । (क) निजी स्थिर निवेश (Private Fixed Investment) जो व्यय उद्यमकर्ता नई मशीनों , अन्य पूंजीगत साज - सामान पर करते हैं , (ख) आवासीय निवेश (Residential Investment) जो व्यय मकानों के निर्माण पर किया जाता हैं , (ग) वस्तुओं के स्टाक भण्डारों में वृद्धि (Increase in stock of goods) ।

(3) सरकार द्वारा किये गये व्यय (Government Purchases) - इसमें देश की सरकार जिसमें केन्द्रीय , राज्य तथा स्थानीय सरकारें शामिल हैं वस्तुओं तथा सेवाओं पर किया गया व्यय शामिल होता है । सरकार द्वारा किया गया प्रतिरक्षा (defence) , पोलिस (Police) तथा विकास कार्यों (development works) जैसे कि सड़कों , नहरों , सरकारी उद्योगों की स्थापना तथा संचालन इत्यादि पर किया गया व्यय सम्मलित होता है । किन्तु इसमें सरकार द्वारा व्यक्तियों को किए गए

हस्तांतरित भुगतानों (transfer payments) जैसे कि सामाजिक सुरक्षा तथा कल्याण (social security and welfare) पर किए गए व्यय को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता क्योंकि ये हस्तांतरित भुगतान वर्तमान आय का पुनर्वितरण मात्र हैं न कि वस्तुओं तथा सेवाओं के बदले में किए गए भुगतान ।

(4) निवल निर्यात (Net Exports)- अर्थात् देश का निर्यात आधिक्य (export surplus) । दूसरे शब्दों में , जितना व्यय विदेशी किसी देश की वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने पर करते हैं वह उस देश द्वारा विदेशों से आयात की गई वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य से कितनी अधिक है । यदि निर्यात को X द्वारा तथा आयात को M द्वारा व्यक्त किया जाय तो X - M या X , निवल निर्यात का सूचक है । यदि वैयक्तिक उपभोग व्यय को C द्वारा , कुल निजी निवेश को / द्वारा , सरकार द्वारा किए गए व्यय को G द्वारा , तथा निवल निर्यात को X द्वारा व्यक्त किया जाए तो सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) को निम्न जोड़ से प्राप्त किया जा सकता है ।

अतः सकल राष्ट्रीय आय या उत्पाद

(GNP) = C + I + G + X ,

3-आय विधि -

राष्ट्रीय आय मापने की दूसरी विधि आय विधि है । यह विधि राष्ट्रीय आय तक वितरण की ओर से पहुंचती है । दूसरे शब्दों में , इस विधि में राष्ट्रीय आय का अनुमान देश के विभिन्न व्यक्तियों या वर्गों को आर्यों को जोड़ कर किया जाता है । व्यक्ति अपनी सेवाओं या अपनी सम्पत्ति या साधनों जैसे भूमि और पूंजी की सेवाओं का राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान देकर आयों को कमाते हैं । इस लिए राष्ट्रीय आय का अनुमान भूमि का किराया , सभी प्रकार के कर्मचारियों की मजदूरी या वेतन , पूंजी पर ब्याज , व्यावसायिक निगमों के शेयरों से प्राप्त लाभांश (dividends) , व्यावसायिक निगमों अर्थात् मिश्रित पूंजी कम्पनियों के अवितरित लाभ तथा अपना व्यवसाय करने वालों को आयों अर्थात् गैर - निगमीय व्यवसायों की आय अथवा लाभ (income from the unincorporated businesses) , निगमों पर लगाए गए आय कर तथा नौकरियों में लगे व्यक्तियों द्वारा अपनी आयों से की गई सामाजिक सुरक्षा कटौतियां (social security contibutions) जैसे कि प्रावीडेण्ट फण्ड आदि को जोड़ कर किया जाता है । विभिन्न उद्योगों या फर्मों में जो उत्पादन होता है वह सारा लोगों को आय के रूप में नहीं मिलता । उदाहरण के तौर पर सरकार उद्योगों के पदार्थों पर अप्रत्यक्ष कर लगाकर कुछ उत्पादन को रूप में ले लेती है । इसलिए आय विधि से राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय सभी व्यक्तियों या वर्गों की आयों के कुल जोड़ में अप्रत्यक्ष कर जमा कर देने होते हैं । उपर्युक्त सब राशियों को अप्रत्यक्ष करों समेत जोड़ने से निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product) का पता चल जायगा । यदि

आय विधि से हमें कुल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) ज्ञात करना हो तो इस प्रकार निवल राष्ट्रीय उत्पाद में पूंजी को घिसावट अथवा मूल्यहास (depreciation) की मात्रा जोड़नी होगी । आय विधि से राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने का बड़ा लाभ यह है कि इससे देश के विभिन्न वर्गों , जैसे भू - स्वामी , पूंजीपति , श्रमिक आदि में राष्ट्रीय आय के वितरण का पता चल जाता है ।

आय सम्बन्धी अन्य महत्वपूर्ण अवधारणा

व्यक्तिक आय (Personal Income)-एक वर्ष में देश के सभी लोग या परिवार जितनी आय प्राप्त करते हैं वह व्यक्तिक आय कहलाती है|यह आय राष्ट्रीय आय से अलग होती है क्योंकि उत्पादन साधनों को उनकी पूरी आय नहीं दी जाती बल्कि भविष्य के लिए कुछ जमा रखा जाता है, उत्पादक पर लगे कर का भी भुगतान करना होता है और भविष्य कि योजनाओं के लिए लाभ का कुछ हिस्सा भी कम्पनी अपने पास रखती है |इस तरह ये आय का हिस्सा उत्पादन के साधनों को भुगतान करते समय राष्ट्रीय आय से निकाला जाता है| उत्पादन के साधनों को कुछ ऐसे भुगतान भी होते हैं जिनका उस वर्ष के उत्पादन में बिना किसी योगदान के प्राप्त होता है,इन्हें हस्तान्तरण भुगतान कहा जाताहै| अत:

व्याक्तिक आय =राष्ट्रीय आय - सामाजिक सुरक्षा कटौती - कंपनी लाभ पर कर - अवितरित लाभ +हस्तान्तरण भुगतान

उपभोग्य आय (Disposable Income)- व्यक्तिक आय से प्रत्यक्ष करों को घटाने के बाद जो शेष व्यक्तिक आय बच जाती है वह उपभोग योग्य आय कहलाती है |

उपभोग्य आय = व्यक्तिक आय -प्रत्यक्ष कर

उपभोग्य आय =राष्ट्रीय आय - सामाजिक सुरक्षा कटौती - कंपनी लाभ पर कर - अवितरित लाभ + हस्तान्तरण भुगतान - प्रत्यक्ष कर

चालू और स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय

हम जानते है कि राष्ट्रीय आय में चालू वर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बाज़ार मूल्य को लिया जाता है| इसके लिए हम सभी वस्तुओं और सेवाओं की संख्या को उनके मूल्य से गुणा कर प्राप्त करते हैं | हम यह भी जानते है कि सामान्य कीमतें स्थिर नहीं होती हैं इसमे

वृद्धि या ह्रास होता रहता है | अत: ऐसा भी हो सकता है कि राष्ट्रीय आय में वृद्धि या कमी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि या कमी के कारन न होकर कीमतों में परिवर्तन के कारन हो|

यदि ऐसा होता है तो यह आर्थिक विकास कि सही स्थिति का आकलन नहीं होगा इसीलिए राष्ट्रीय उत्पाद में वास्तविक परिवर्तन ज्ञात करने के लिए एक विशेष या आधार वर्ष के कीमतों के आधार पर चालू वर्ष के राष्ट्रीय उत्पाद को समायोजित किया जाता है|इस प्रकार आधार वर्ष की कीमतों के आधार पर समायोजित राष्ट्रीय आय स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय कहलाती है|

किसी वर्ष में स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय= $\frac{\text{उस वर्ष चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय}}{\text{उस वर्ष का मूल्य सूचकांक}} * 100$

जैसे चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय रु110000 हो और आधार वर्ष से थोक कीमत सूचकांक 110 हो तो स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय=110000/110 *100

=100000 रु

राष्ट्रीय आय मापन में समस्या

` राष्ट्रीय आय या उत्पाद के अध्ययन से स्पष्ट है कि इसका मापन एक जटिल प्रक्रिया है |इस कारण इसमें अनेक समस्यायें भी होती है यह समस्या विकासशील और अल्पविकसित देश में अमौद्रिक और असंगठित क्षेत्र की अधिकता के कारण और अधिक होती हैं |कुछ समस्यायें निम्नलिखित हैं-

धारणात्मक समस्या :- उत्पादक और अनुत्पादक क्रियाओं में भेद करना कठिन जैसे घर में काम करने वाली घर की महिला का कार्य तो जीडीपी की गणना में नहीं आता लेकिन वही काम कोई और करे और उसके बदले आय प्राप्त करे तो वह जीडीपी में जोड़ा जाता है| इसी प्रकार किसान द्वारा अपने उपभोग के लिए रखे गये आनाज कि गणना जीडीपी में नहीं होती लेकिन यही अनाज वह बेच दे तो उसकी आय जीडीपी में जोड़ी जाती है इस प्रकार कि अनेक क्रियाएं हैं जो मुद्रा के रूप में मूल्यांकित नहीं होने के कारण जीडीपी में सम्मिलित नहीं कि जाती हैं |

इसी प्रकार अंतिम और माध्यामिक वस्तु के बीच बटवारा करना भी अत्यंत कठिन है ऐसा जब एक ही वस्तु अनेक प्रयोग में सम्मिलित होती हो |जैसे बिजली का उपयोग |लेकिन इस समस्या का समाधान मूल्य वर्धन विधि के मापन से दूर हो जाती है |

बहुत सी सेवा या कार्य बिना मुद्रा के होते हैं उनका मापन जीडीपी में नहीं हो पाता है |

विकासशील देशों में डाटा का बहुत अभाव होता है इस कारण सेवा वस्तु उत्पादन का बहुत बड़ा हिस्सा जीडीपी गणना में नहीं आ पाता|

व्यावसायिक विशेषीकरण न होने के कारण एक ही व्यक्ति कि कई स्रोतों से आय होती है उनका आकलन भी बहुत मुश्किल होता है |